IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# राजस्थानी लोक साहित्य में राजपूतों की वीरता एवं शौर्य

प्रीतो पारीक

शोधार्थी

डॉ. पिंकी पारीक

सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग

वनस्थली विद्यापीठ

शोध सार –

राजस्थान का भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। प्राचीनकाल से ही राजस्थान अपनी आन–बान के लिए प्रसिद्ध रहा है। यहाँ के सूरमाओं ने शौर्य तथा बलिदान के नित नये कीर्तिमान स्थापित किए हैं। राजस्थान को वीरों की भूमि कहा जाता है। यह प्रदेश भारतीय इतिहास को गौरवशाली परम्परा का जीवन प्रतीक है। यहाँ का इतिहास राजपूतों की वीरता एवं शौर्य गाथाओं से भरा पड़ा है। राजस्थानी लोकसाहित्य में राजपूतों की वीरता के किस्से यहाँ के जनमानस के लिए प्रेरणीय है। राजस्थान की ऐतिहासिक परम्परा वीरता, स्वाभिमान और बलिदान के आदर्शों से परिपूर्ण रही है। यहाँ के राजपूत शासकों और वीर योद्धाओं ने अपने राज्य, धर्म और स्वाभिमान की रक्षा के लिए अनेक युद्ध लड़े और असाधारण साहस का परिचय दिया। यही कारण है कि राजपूतों की वीरता और शौर्य राजस्थानी साहित्य का प्रमुख विषय बन गया।

बीज शब्द – परम्परा, स्वाभिमान, शौर्य, बलिदान, वचननिर्वाह, शरणागत, मातृभूमि, वीरत्व।

राजस्थान में अनेक वीर राजपूत शासक तथा सामंत हुए है। जिन्होंने अपनी वीरता तथा शौर्य का लोहा मनवाया है। राजस्थान की राजपूत जाति अपनी मातृभूमि की रक्षा, वचन पालन तथा वीरतापूर्वक कार्यों के लिए जानी जाती रही है। राजस्थानी लोकसाहित्य में हमें अनेक वीर राजपूत योद्धाओं का वर्णन मिलता है। जिन्होंने अपनी आन–बान–शान के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

''राजस्थान सदैव से वीरत्व का पालना और शौर्य की क्रीड़ा स्थली रहा ह। इस वीरता के पीछे जिन उदात्त जीवन मूल्यों की प्रेरणा रही है, उसने इस वीरता को एक अनूठी गरिमा व महिमा से मंडित कर दिया। इसमें मातृभूमि के प्रति प्रेम, स्वामी भक्ति, वचन निर्वाह, शरणागत वात्सल्य जैसे दुर्लभ गुणों व आदर्शों का समावेश हैं। जिनके लिए इस धरती के लालों ने किसी भी त्याग को महंगा नहीं समझा।''[1]

यहाँ के राजपूतों की वीरता एवं शौर्य के किस्सों से लोक साहित्य भरा पड़ा है। राजस्थान को लोक गाथाओं, कथाओं तथा लोकगीतों में पृथ्वीराज चौहान, महाराणा प्रताप, हम्मीर देव चौहान, राणा रतनसिंह, जयमल–पत्ता, पाबूजी, गोगाजी, गोरा बादल जैसे यौद्धाओं की वीरता के किस्से गाकर सुनाये जाते हैं, जो सदियों से यहाँ कि लोकमानस के लिए प्रेरणीय रहे हैं। वीरों के साथ–साथ राजपूत वीरांगनाओं जिक्र भी हमें लोकसाहित्य में मिलता है। जिन्होंने सम्मान, वचन बद्धता तथा मातृभूमि की रक्षा हेतु अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया।

राजस्थान की वीर प्रसूत भूमि वीरों का समुचित सम्मान करना जानती है। यहाँ के वीरों ने प्रजा की रक्षा, लोकहित, आन–मान मर्यादा तथा वचन पालन के लिए हँसते–हँसते अपने प्राणों का बलिदान दे दिया। राजपूतों की वीरता तथा शौय में 'पाबूजी राठौड़' का नाम विशेष उल्लेखनीय है। पाबूजी अपने वीरता और साहस पूर्ण कार्यों के लिए जाने जाते हैं। राजस्थानी लोक साहित्य में पाबूजी की गाथा एक महत्वपूर्ण गाथा है, जिसमें पाबूजी के वीर और चमत्कारी कार्यों का बड़ा रोचक वर्णन है। गाथा में बताया गया है कि पाबूजी ने देवल चारणी को वचन दिया था कि वह खींची से चारणी की गायों की रक्षा करेगें।

पाबूजी ने अपने वचन बद्धता का परिचय देते हुए कहा– ''हे सोढ़ी जी खास अपराध तो मेरा है, वचन बद्ध होने के कारण में तीसरे भांवर में ही उठकर जा रहा हूँ। जिस प्रकार मर्दों का पिता एक ही होता है, उसी प्रकार उनका वचन भी एक ही होता है।''[2] इस प्रकार राजस्थानी लोकसाहित्य में पाबूजी राठौड़ अपनी वीरता, शौर्य तथा वचन पालन के लिए अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।

राजस्थानी लोकसाहित्य में राजपूतों की वीरता एवं शौर्य में महाराणा प्रताप का नाम बड़े ही सम्मान के साथ लिया जाता है। महाराणा प्रताप राजस्थान के ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत के लिए अमूल्य निधि है। महाराणा प्रताप को उनके अदम्य साहस तथा अड़िग स्वाभिमान के सर्वोच्च प्रतीक के रूप में पूजा जाता है।

राजस्थानी लोकगीतों में महाराणा प्रताप की वीरता तथा शौर्य का बड़ा ही रोचक वर्णन किया गया है। 'कण–कण सूं गूंजै, जै जै राजस्थान' गीत में महाराणा प्रताप के शौर्य तथा हल्दी घाटी के युद्ध का वर्णन है। गीत की कुछ पंक्तियाँ कुछ इस प्रकार है –

''हल्दी घाटी प्रताप रै तप पर जग कुरबान

चेतक अर चितौड़ पे सारै जग नै है अभिमान

कितरो कितरो रै करां म्हे बखाण।

कण–कण सूं गूंजै, जै जै राजस्थान।''[3]

राजस्थानी के लोक साहित्य में राजपूतों की वीरता एवं शौर्य में रणथम्भौर के शासक हम्मीर देव का नाम भी बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है। हम्मीर ने अलाउद्दीन से युद्ध करते हुए अपने प्रजा के रक्षार्थ अपने प्राणों का बलिदान दिया। हम्मीर देव चौहान एक वीर योद्धा था, जिसने अपनी वीरता एवं शौर्य का परिचय देते हुए अंतिम सांस तक दुश्मन का सामना किया।

राजस्थान की धरती शूरवीरों की धरती है। इन राजपूत वीरों ने अपनी मातृभूमि की रक्षार्थ अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। ''इस धरती के वीर सपूतों के शौर्य एवं पराक्रम का कोई सानी नहीं है। वीरत्वपूर्ण आवेश के परिणाम स्वरूप सिर कटने पर भी शत्रु दल पर कहर ढाने वाले राजस्थानी वीरों की अप्रतिम शौर्य गाथाएँ आज भी पाठकों के दिल में एक रोमांच उत्पन्न कर देती है।''[4]

दुर्गादास राठौड़ का नाम भी राजस्थान में राजपूतों की वीरता तथा शौर्य का ज्वलन्त उदाहरण है। दुर्गादास राठौड़ एक वीर राजपूत योद्धा होने के साथ–साथ एक उच्च कोटि के स्वामी भक्त भी थे। दुर्गादास की वीरता तथा स्वामी भक्ति का यहाँ के लोकसाहित्य में व्यापक वर्णन मिलता है। राजस्थान में यहाँ कि नारियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वह ऐसे पुत्र को जन्म दे जैसा वीर दुर्गादास राठौड़ था। इससे सम्बन्धित दोहा इस प्रकार है –

''जननी जणै एहड़ा जण, जेहड़ा दुरगादास।

मार मंडासो थांमियौ, विण थंभा आकास।।''[5]

राजस्थानी लोक साहित्य में राजपूत वीरों में पृथ्वीराज चौहान का नाम भी बड़े आदर के साथ लिया जाता है। पृथ्वीराज चौहान अजमेर के शासक थे। ये चौहान वंश के प्रसिद्ध राजा थे। ये एक कुशल योद्धा तथा श्रेष्ठ तलवार बाज थे इन्होंने तराइन के प्रथम युद्ध में गौरी को पराजित किया। लोककथाओं में चौहान को 'रायपिथोरा' भी कहा गया है। चन्दरबरदायी द्वारा रचित 'पृथ्वीराजरासो' में पृथ्वीराज चौहान की वीरता, युद्ध कौशल, उनके जीवन शौर्य तथा पराक्रम का सजीव वर्णन है।

इसी के साथ कल्लाजी राठौड़ भी प्रमुख राजपूत शासक हुए हैं, जिन्होंने अपनी वीरता का परिचय देते हुए अकबर की सेना से भंयकर युद्ध किया। कल्लाजी की वीरता के संदर्भ में राजस्थानी लोकसाहित्य में एक दोहा बहुत प्रसिद्ध है –

''तोड़ हल्ला अकबर तणां, तेग झल्ला ता ठौड़।

भल्ला करण दळ भांजणां, रंग कल्ला राठौड़।।''[6]

राजस्थानी लोक साहित्य में जिस प्रकार राजपूत वीरों ने अपनी वीरता तथा शौर्य का परिचय दिया उसी प्रकार यहाँ के राजपूत नारियों ने भी समय– समय पर आवश्यकता पड़ने पर अपनी आन–बान की रक्षा हेतु अपनी वीरता तथा शौर्य का लोहा मनवाया। ''वीर राजपूत यौद्धाओं के साथ–साथ राजस्थान की वीरांगना राजपूत स्त्रियाँ भी वीरता में किसी से पीछे नहीं रही हैं। उनकी वीरता की कहानियाँ भी प्रसिद्ध है। इन राजपूत स्त्रियों का अपनी लाज बचाने के लिए 'जौहर' प्रथा को अपना लेना सर्वविदित है।''[7]

राजपूत नारी न अपने साहस, त्याग, वीरता, सतीत्व की रक्षा, स्वामी भक्ति, पतिपरायणता, शील व स्वाभिमान की रक्षा, वीर पुत्री, वीर माता तथा वीर पत्नी के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाइ है। इन वीर नारियों में पन्नाधाय, रानी पद्मिनी, हाड़ीरानी, कर्मवती, चारूमती तथा जसवंत दे हाड़ी का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

पन्नाधाय एक वीर तथा स्वामिभक्त नारी थी, जिन्होंने अपनी स्वामिभक्ति का परिचय देते हुए चितौड़ के उत्तराधिकारी उदयसिंह की रक्षा के लिए अपने पुत्र का बलिदान दे दिया। पन्नाधाय खींची वंश के राजपूत परिवार में पैदा हुई थी तथा उसने अपना सारा जीवन चितौड़ के सिसोदिया वंश की सेवा में लगा दिया। जब पन्नाधाय को पता लगा कि बनवीर राजकुमार उदयसिंह को मारने आ रहा तो उन्होंने उदयसिंह के स्थान पर अपने बालक को सुला दिया। ''इसी समय बनवीर ने पन्नाधाय की तरफ देखा और पूछा– उदयसिंह कहाँ है? पन्ना के मुख से कुछ न निकला। घबराहट के साथ उसने अपने सोते बालक की तरफ संकेत किया बनवीर ने उस बालक की तरफ देखा और बात की बात में उसने अपनी तलवार से उसके टुकड़े कर डाले। पन्नाधाय ने अपने बालक की हत्या का यह दृश्य अपने नेत्रों से देखा। उसका कलेजा अस्थिर हो रहा था, उसके प्राण काँप रहे थे। उसके नेत्रों से आँसुओं की धारा बह निकली। परन्तु उसके मुँह से किसी प्रकार की आवाज नहीं निकली।''[8] इस प्रकार पन्नाधाय ने अपनी

बहादुरी तथा स्वामिभक्ति का परिचय देते हुए उदयसिंह के प्राणों की रक्षा की ओर इतिहास में अमर हा गई।

राजस्थान की वीर राजपूत नारियों में चितौड़ की रानी पद्मिनी का विशिष्ट स्थान है। रानी पद्मिनी एक श्रेष्ठ हिन्दू राजपूत नारी थी जिसने अपने सतीत्व की रक्षा तथा जाति के गौरव के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया।

''हिन्दू जाति के अस्तित्व को नष्ट करने वाले उस प्रलय–काल समान दुर्दैवी युग में ऐसी एक आदर्श आर्य नारी हुई जिसने अपने सतीत्व और जातीय गौरव की रक्षा के निमित्त इस प्रकार प्राणों की आहुति दे दी कि जिसके कारण संसार में आज तक हिन्दू जाति के गरिमाशाली गौरव की दित्य ज्योति का प्रतापी प्रकाश प्रदीप्त है।''[9] इस प्रकार रानी पद्मिनी का नाम भी राजस्थान की एक विशिष्ट वीरांगना तथा सती नारी के रूप में राजस्थान के जनमानस में बड़े आदर तथा सम्मान के साथ लिया जाता है।

यहाँ की राजपूत नारियों की शौर्य तथा सतीत्व का बड़ा ही रोचक वर्णन यहाँ के अनेक दोहों में मिलता है –

''संग बळ जावै नारियां, नर मर जावै कट्ट।

घर बाळक सूना रमै, वे भोगै रजवट्ट।।''[10]

हाड़ी रानी जैसी वीरांगना का जिक्र भी हमें राजस्थान के लोक साहित्य में मिलता है। हाड़ी रानी सलूम्बर के चूड़ावत की पत्नी थी। चूड़ावत अपनी रानी से अत्यधिक प्रेम करता था। युद्ध के लिए जाते समय जब राजा का मन अपनी रानी में ही बसा था तब चूड़ावत राजा की हाड़ी रानी अपने पति (पत्नि प्रेम के कारण जो युद्ध भूमि में नहीं जा रहा था) को मोहवंदन से मुक्त करने के लिए अपना सिर काटकर निशानी के तोर पर भेजती है और राजा होश में आकर रानी का विचार त्याग कर युद्ध करने के लिए चला जाता है। इस संदर्भ में लोकसाहित्य में एक दोहा इस प्रकार है –

''सत री सहनांणी चही, समर सळबूर धीस।

चूड़ामण मेली सिया, उण धण मेल्यौ सीस।।''[11]

इस प्रकार हाड़ी रानी लोक साहित्य में स्त्री बलिदान का अमर प्रतीक बन गई। इसी के साथ–साथ भी राजपूत नारियों में कर्मवति, चारूमति आदि का नाम भी बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है।

निष्कर्ष – इस प्रकार राजस्थानी लोक साहित्य राजपूतों की वीरता एवं शूरवीरों के किस्सों से भरा पड़ा है। चारण, भाट और कवियों ने अपनी रचनाओं में राजपूत वीरों के पराक्रम, त्याग और युद्ध कौशल का वर्णन किया है। इस प्रकार राजस्थानी साहित्य न केवल साहित्यिक परम्परा का प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि यह राजस्थान के इतिहास और वीरता की भावना का भी महत्वपूर्ण दर्पण है।

सन्दर्भ सूची –


1 डॉ. कन्हैया लाल राजपुरोहित, स्वाधीनता संग्राम में राजस्थान की आहुतियाँ, साइन्टिफिक पब्लिशर्स, जोधपुर, 1993, पृ.सं.–5

2 डॉ. कृष्ण बिहारी सहल, राजस्थानी लोकगाथा कोष, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2011, पृ.सं.–38

3 सुनिता बापना, राजस्थानी लोकगीत संग्रह, साहित्यागार, जयपुर, 2024, पृ.सं.–17

4 डॉ. विक्रम सिंह राठौड़, मारवाड़ का सांस्कृतिक इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 1996, पृ.सं.–13

5 समुद्र सिंह जोधा, राजस्थानी दोहावली, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2015, पृ.सं.–65

6 समुद्र सिंह जोधा, राजस्थानी दोहावली, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2015, पृ.सं.–68

7 डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी, राजस्थान : संस्कृति, कला एवं साहित्य, राजस्थानी हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2016, पृ.सं.–8

8 कर्नल जेम्स टॉड, अनुवादक– केशव ठाकुर, राजस्थान का इतिहास, साहित्यागार, जयपुर, 2008, पृ.सं.–167

9 कवि हेमरतन, गोरा बादल चरित्र, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1968, पृ.सं.–3

10 समुद्र सिंह जोधा, राजस्थानी दोहावली, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2015, पृ.सं.–46

11 समुद्र सिंह जोधा, राजस्थानी दोहावली, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2015, पृ.सं.–68